# SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
# Dev Nagar, Delhi - 110005

## Post-Event Report

| | |
|---|---|
| **Event** | व्याख्यान |
| **Topic** | प्रसाद साहित्य के विविध आयाम |
| **Organizer** | हिंदी साहित्य सभा मंथन । |
| **Date** | 10 अक्टूबर 2025 |
| **Time** | 12 बजे |
| **Duration** | 2 घंटे |
| **Place/Platform** | संगोष्ठी कक्ष |
| **Number of Participants** | 30+ |
| **Welcome Speech** | जिज्ञासा |

**Activities**

**10** अक्टूबर **2025** को श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) में हिंदी व हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के हिंदी साहित्य सभा 'मंथन' द्वारा 'प्रसाद साहित्य के विविध आयाम ' विषय पर एक विशिष्ट संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ औपचारिक स्वागत समारोह के साथ हुआ।

मुख्य वक्ता प्रोफेसर रामनारायण पटेल ने अपने सारगर्भित व्याख्यान में केंद्रीय भाग जयशंकर प्रसाद की कृतियों के आध्यात्मिक और दार्शनिक पहलुओं पर केंद्रित किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रसाद का साहित्य केवल कला या मनोरंजन नहीं है, बल्कि यह "जीवन के आध्यात्मिक लोक से जुड़ने की मांग है"। उन्होंने प्रसाद को एक "श्रेष्ठ पुरुष" बताते हुए उनके लेखन में निहित गहन विचारों और अस्तित्ववादी दृष्टिकोण की व्याख्या की, जिससे श्रोताओं को प्रसाद की रचनाओं को एक नई दार्शनिक दृष्टि से समझने का अवसर मिला।

अंत में, संगोष्ठी का समापन महेंद्र प्रताप सिंह द्वारा दिए गए औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। उन्होंने प्रोफेसर पटेल के ज्ञानवर्धक व्याख्यान और सभी उपस्थित लोगों की सहभागिता के लिए आभार व्यक्त किया, जिससे कार्यक्रम सफलतापूर्वक और उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

# SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
# Dev Nagar, Delhi - 110005

| **Main Ideas** | |
|---|---|
| • इस कार्यक्रम का मूल विचार जयशंकर प्रसाद के साहित्य को केवल कविता तक सीमित न रखकर, उसके विविध और बहुआयामी स्वरूप पर प्रकाश डालना था। वक्ता ने प्रसाद के लेखन को एक व्यापक दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता पर बल दिया, जिसमें उनके नाटक, उपन्यास, कहानियाँ और वैचारिक गद्य सभी शामिल थे।<br>• व्याख्यान का एक केंद्रीय विचार यह था कि प्रसाद का साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह जीवन के आध्यात्मिक लोक से जुड़ने की मांग करता है। यह सुझाव दिया गया कि उनकी रचनाएँ पाठकों को भौतिक जगत से परे, आत्मिक चिंतन और उच्च मानवीय आदर्शों की ओर ले जाती हैं।<br>• प्रोफेसर ने प्रसाद द्वारा लिखे गए नाटकों के दार्शनिक महत्व को स्पष्ट किया। यह मुख्य विचार प्रस्तुत किया गया कि प्रसाद के नाटक केवल ऐतिहासिक या सामाजिक घटनाएँ नहीं दिखाते, बल्कि वे समग्र विश्व में एकता के प्रतीक के रूप में कार्य करते हैं, जो मानव मात्र की सार्वभौमिक भावनाओं को जोड़ते हैं।<br>• वक्ता ने बताया कि प्रसाद के साहित्य में संक्षेप में समसामयिक सामाजिक समस्याओं का वर्णन हुआ करता है। यह विचार प्रसाद के लेखन की समकालीन प्रासंगिकता को स्थापित करता है, जो दिखाता है कि वे एक इतिहासकार या कवि होने के साथ-साथ अपने समय के समाज सुधारक और चिंतक भी थे।<br>• संगोष्ठी में केवल प्रसाद पर ही ध्यान केंद्रित नहीं किया गया, बल्कि उनके प्रभाव को समझने के लिए छायावाद युग के अन्य प्रभावशाली कवियों का भी उल्लेख किया गया। यह विचार प्रसाद के लेखन को एक व्यापक साहित्यिक आंदोलन के संदर्भ में रखने और उस युग के सामूहिक योगदान को समझने में सहायक था।<br>• व्याख्यान के दौरान छायावाद की शुरुआत और 'पहली कविता' का श्रेय किसे दिया जाना चाहिए, इस पर भी विचार किया गया। यह अकादमिक बिंदु छायावाद के इतिहास लेखन और उसके प्रारंभिक अग्रदूतों के योगदान को लेकर चल रही साहित्यिक बहसों को दर्शाता है।<br>• संगोष्ठी में प्रोफेसरों और छात्रों द्वारा सामूहिक रूप से वक्ता का सम्मान किया जाना इस विचार को पुष्ट करता है कि प्रसाद साहित्य और उस पर हो रहे शोध को शिक्षा जगत में अत्यधिक महत्व और स्वीकार्यता प्राप्त है। यह वातावरण प्रसाद के योगदान को अकादमिक रूप से स्थापित करता है।<br>• यह संगोष्ठी हिंदी व हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की साहित्य सभा 'मंथन' द्वारा आयोजित की गई थी, जिसने विभाग के भीतर सामुदायिक सहयोग और शैक्षणिक विमर्श को बढ़ावा दिया। यह आयोजन अपने उद्देश्यों की पूर्ति में पूर्णतः सफल रहा। | |
| **Vote of thanks** | **महेंद्र प्रताप सिंह** |

# SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
## Dev Nagar, Delhi - 110005

**Poster (Attach below )**

**Pictures (Attach Five Photos)**

# SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
## Dev Nagar, Delhi - 110005

Attach Photocopy of two Certificates-

हस्ताक्षर:

डॉ. अंजुबाला
(विभाग प्रभारी)

# SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
## Dev Nagar, Delhi - 110005